कौटिल्य एकेडमी
www.kautilyaacademy.com IAS • IPS • MPPSC • CJ-II

CURRENT AFFAIR

05th JULY 2023

1. ऊर्जा संक्रमण सूचकांक 2023
2. भारत आर्टेमिस समझौते में शामिल होने की घोषणा
3. भारत 6जी एलायंस
4. पैंगोंग त्सो झील
5. मोजाम्बिक

ऊर्जा संक्रमण सूचकांक 2023

- विश्व आर्थिक मंच (डब्ल्यूईएफ) ने **'फोस्टरिंग इफेक्टिव एनर्जी ट्रांजिशन 2023'** नामक एक रिपोर्ट प्रकाशित की जिसमें ऊर्जा संक्रमण के आधार पर 120 देशों को स्थान दिया गया।
- इस रैंकिंग में डब्ल्यूईएफ ने ऊर्जा संक्रमण सूचकांक (ईटीआई) में वैश्विक स्तर पर भारत को 67वें स्थान (20 स्थान की छलांग) पर रखा है। जो साल 2021 में भारत 115 देशों में 87वें स्थान पर था।
- भारत एकमात्र प्रमुख अर्थव्यवस्था है जिसमें सभी आयामों में ऊर्जा परिवर्तन की गति तेज़ देखी गई है और सिंगापुर एकमात्र अन्य प्रमुख देश है जो संतुलित तरीके से स्थिरता, ऊर्जा सुरक्षा और इक्विटी को बढ़ाकर **"उचित गति"** प्रदर्शित कर रहा है।
- शीर्ष 10 देशों में फ्राँस (7वें) एकमात्र G20 देश था, उसके बाद जर्मनी (11वें), अमेरिका (12वें) और यूनाइटेड किंगडम (13) का स्थान है।
- वर्ष 2014 के बाद से वैश्विक औसत ETI स्कोर में 10% की वृद्धि हुई है, लेकिन पिछले तीन वर्षों में न्यूनतम वृद्धि देखी गई है। पिछले दशक में केवल 41 देशों ने लगातार प्रगति प्रदर्शित की है।

- वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम (WEF) एक स्विस गैर-लाभकारी संस्थान है जिसकी स्थापना वर्ष 1971 में जिनेवा (स्विट्ज़रलैंड) में हुई थी।
- यह सार्वजनिक-निजी सहयोग के लिये एक अंतर्राष्ट्रीय संस्था के रूप में स्विस सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है।
- संस्थापक और कार्यकारी अध्यक्ष: क्लॉस श्वाब (Klaus Schwab)।
- **WEF द्वारा प्रकाशित प्रमुख रिपोर्टों में से कुछ निम्नलिखित हैं:**
    - ऊर्जा संक्रमण सूचकांक (Energy Transition Index- ETI)
    - वैश्विक प्रतिस्पर्द्धात्मकता रिपोर्ट (Global Competitiveness Report)
    - वैश्विक सूचना प्रौद्योगिकी रिपोर्ट (Global IT Report)
    - वैश्विक लैंगिक अंतराल रिपोर्ट (Global Gender Gap Report)
    - वैश्विक जोखिम रिपोर्ट (Global Risk Report)
    - वैश्विक यात्रा और पर्यटन रिपोर्ट (Global Travel and Tourism Report)

Rank	Country	ETI score (2014–2023)	2023 ETI score	SP[1] ('23)	TR[2] ('23)
1	Sweden		78.5	81.0	74.8
2	Denmark		76.1	73.7	79.8
3	Norway		73.7	77.3	68.3
4	Finland		72.8	68.9	78.6
5	Switzerland		72.4	75.7	67.4
6	Iceland		70.6	73.9	65.6
7	France		70.6	73.3	66.5
8	Austria		69.3	69.2	69.5
9	Netherlands		68.8	65.7	73.5
10	Estonia		68.2	74.2	59.2
11	Germany		67.5	64.6	71.9
12	United States		66.3	68.4	63.2
13	United Kingdom		66.2	67.7	64.0
14	Brazil		65.9	68.9	61.3
15	Portugal		65.8	66.7	64.5
16	Spain		65.0	65.1	64.7
17	China		64.9	65.0	64.8
18	Hungary		64.3	68.8	57.5
19	Canada		64.2	66.7	60.3
20	Luxembourg		64.2	61.5	68.2

www.kautilyaacademy.com | CONTACT: 94250-68121, 91110-10991

भारत आर्टेमिस समझौते में शामिल होने की घोषणा

- भारत हाल ही में आर्टेमिस समझौते का **27वां हस्ताक्षरकर्ता देश** बन गया है। आर्टेमिस समझौता गैर-बाध्यकारी दिशा-निर्देशों का एक संग्रह है जो चंद्र अन्वेषण के लिए अमेरिका के नेतृत्व वाले आर्टेमिस कार्यक्रम का समर्थन करता है।
- भारत ने पहले ही बाह्य अंतरिक्ष संधि और इसके समान आदर्शों को कायम रखने से संबंधित सभी अंतरराष्ट्रीय समझौतों की पुष्टि अपने स्तर से कर दी है।

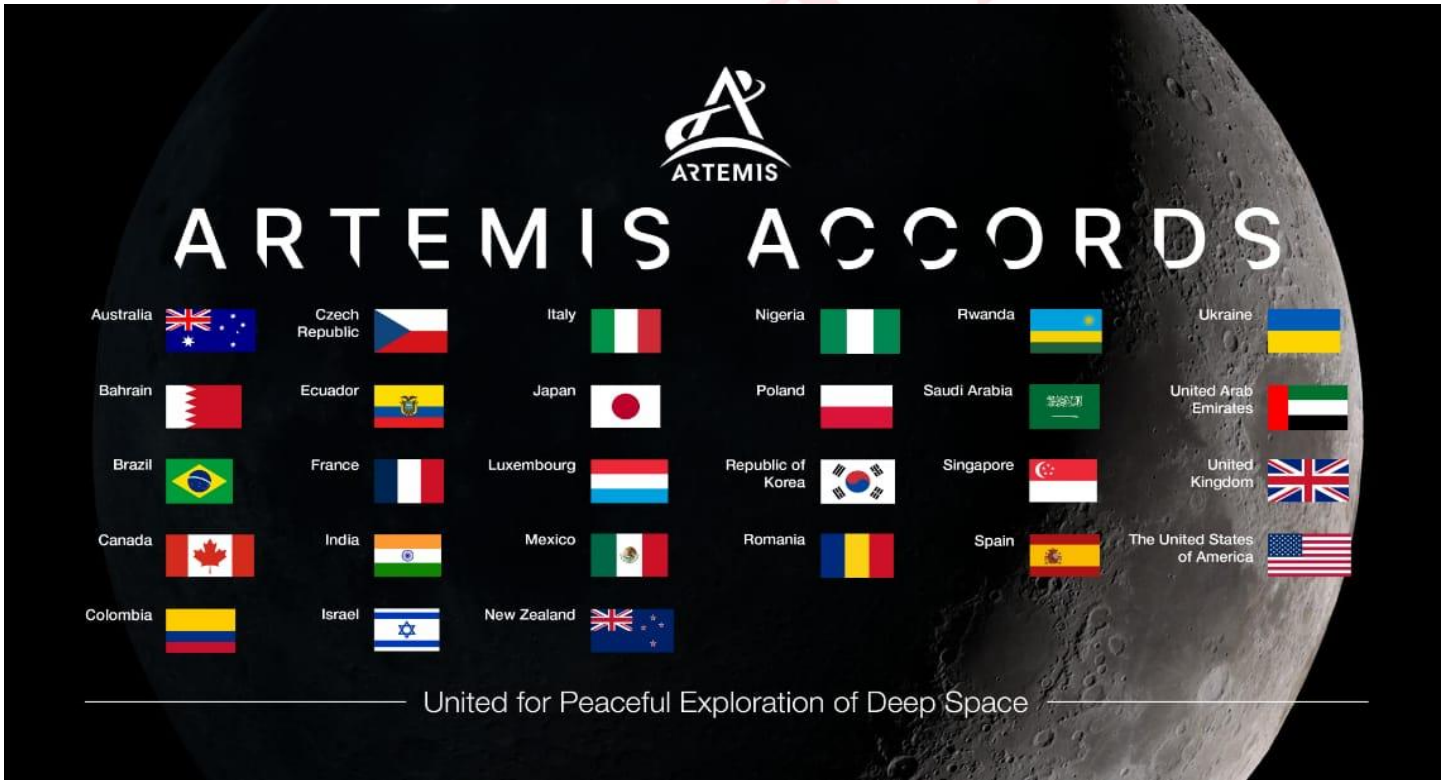

- सात अन्य संस्थापक देशों के साथ संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा वर्ष 2020 में स्थापित आर्टेमिस समझौते, गैर-बाध्यकारी सिद्धांतों का एक संग्रह है जो वर्ष 1967 की बाहरी अंतरिक्ष संधि में उल्लिखित दायित्वों को सुदृढ़ करता है।
- भारत सहित अब तक 27 हस्ताक्षरकर्ताओं के साथ, ये समझौते नागरिक अंतरिक्ष अन्वेषण में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के लिए दिशानिर्देश के रूप में काम करते हैं, विशेष रूप से चंद्र अन्वेषण के उद्देश्य से महत्वाकांक्षी आर्टेमिस कार्यक्रम के संदर्भ में।
- हस्ताक्षरकर्ता अंतर्राष्ट्रीय कानून के अनुसार शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिये अंतरिक्ष गतिविधियों का संचालन करने हेतु सरकारों या एजेंसियों के बीच समझौता ज्ञापन (MOU) को लागू करेंगे।
- हस्ताक्षरकर्ता वैज्ञानिक खोज और वाणिज्यिक उपयोग को बढ़ावा देने के लिये साझा अन्वेषण बुनियादी ढाँचे के महत्त्व को स्वीकार करते हैं।
- हस्ताक्षरकर्ताओं से ऐतिहासिक लैंडिंग स्थलों, कलाकृतियों और खगोलीय पिंडों पर गतिविधि के साक्ष्य को संरक्षित करने की उम्मीद की जाती है।
- हस्ताक्षरकर्ता देशों द्वारा पुराने अंतरिक्ष यान के सुरक्षित निपटान और हानिकारक मलबे के उत्पादन को सीमित करने की योजना बनाना।
- आर्टेमिस कार्यक्रम **16 नवंबर, 2022** को नासा के कैनेडी स्पेस सेंटर से स्पेस लॉन्च सिस्टम (SLS) पर "ओरियन" नामक अंतरिक्ष यान के प्रक्षेपण के साथ प्रारंभ हुआ।SLS, एक सुपर हेवी-लिफ्ट लॉन्च वाहन, ओरियन को एक ही मिशन पर सीधे चंद्रमा पर ले गया।

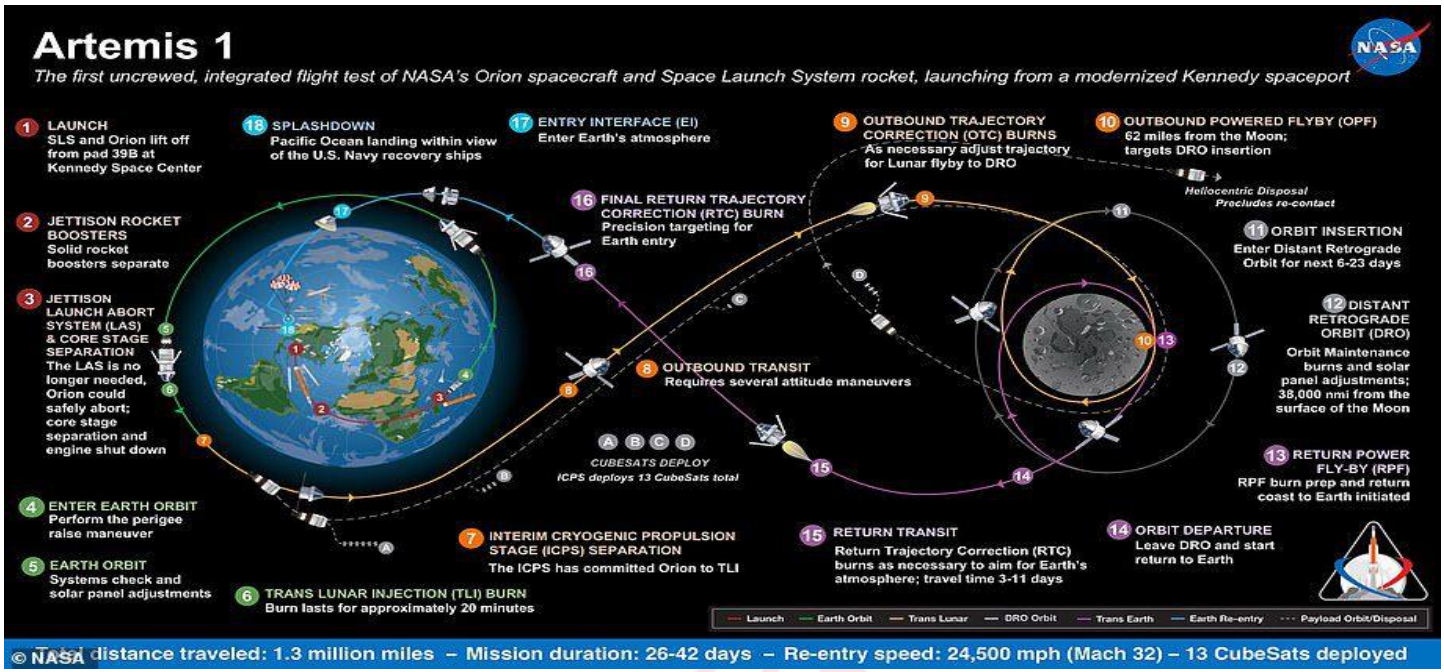

➔ **वर्ष 2024** के लिये निर्धारित आर्टेमिस-II, आर्टेमिस कार्यक्रम के अंतर्गत पहला मानवयुक्त मिशन होगा। SLS में चार अंतरिक्ष यात्री सवार होंगे क्योंकि यह पृथ्वी के चारों ओर विस्तारित कक्षा में कई गतिविधियाँ करता है।मिशन में चंद्र उड़ान तथा पृथ्वी पर वापसी भी शामिल होगी।

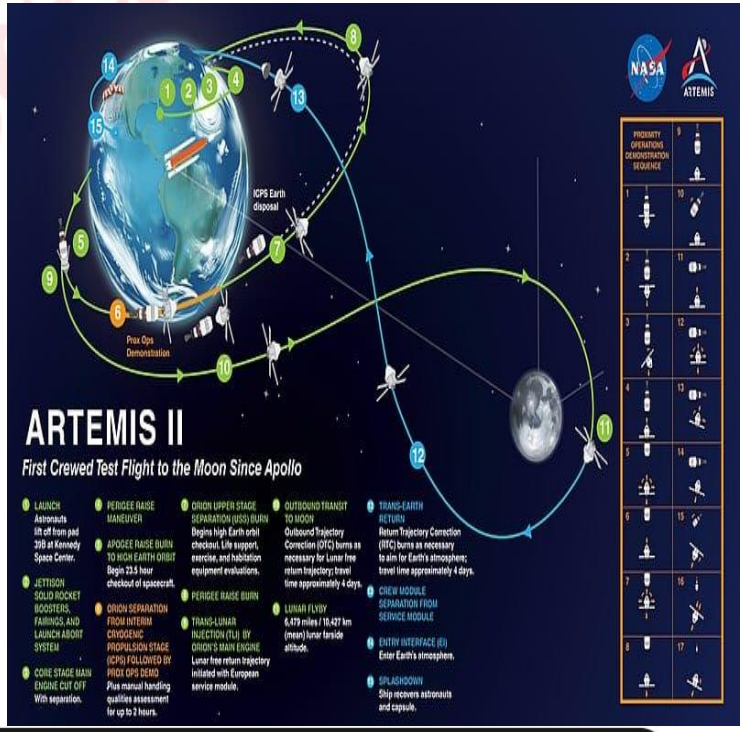

➔ **वर्ष 2025** के लिये निर्धारित आर्टेमिस-III मानव अंतरिक्ष अन्वेषण में एक महत्त्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध होगा क्योंकि अंतरिक्ष यात्री चंद्रमा पर लौटेंगे।यह मिशन आर्टेमिस-II के चंद्र फ्लाई-बाई से आगे जाएगा, जिससे अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्रमा की सतह पर उतरने के साथ चंद्रमा का अधिक व्यापक रूप से अध्ययन करने की अनुमति प्राप्त होगी।

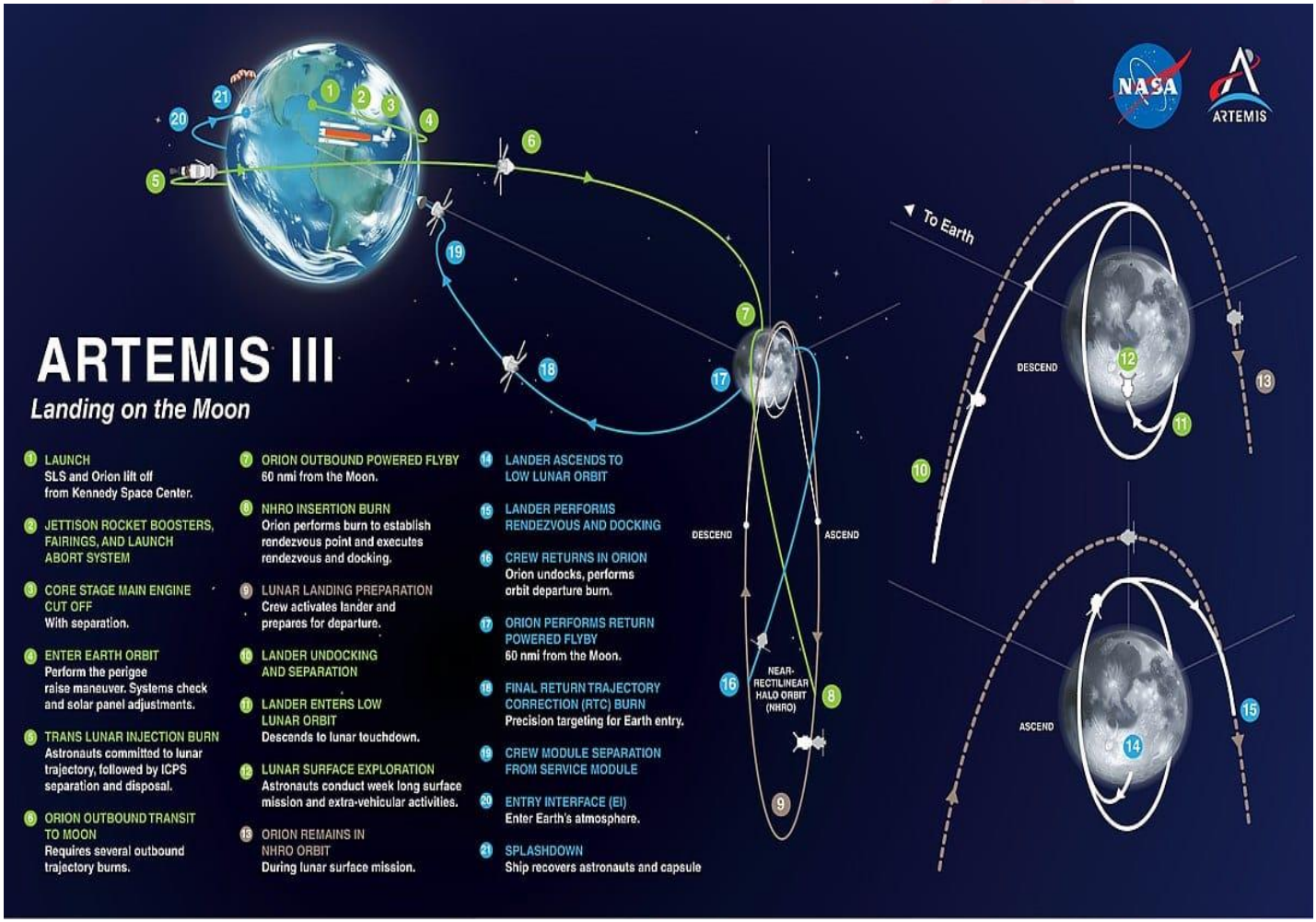

- **वर्ष 2029** के लिये लूनर गेटवे स्टेशन की स्थापना की योजना बनाई गई है। यह स्टेशन अंतरिक्ष यात्रियों के लिये डॉकिंग पॉइंट के रूप में काम करेगा तथा वैज्ञानिक अनुसंधान के साथ प्रयोगों की सुविधा प्रदान करेगा।
- आर्टेमिस समझौते में भारत की भागीदारी भारत को उन्नत प्रशिक्षण, तकनीकी प्रगति और वैज्ञानिक अवसरों तक पहुँच की सुविधा प्रदान करती है।
- चंद्रयान-3 मिशन जैसे अपने चंद्र अन्वेषण लक्ष्यों को आगे बढ़ाने में आर्टेमिस कार्यक्रम भारत के लिये लाभदायक हो सकता है।
- नासा के साथ सहयोग से गगनयान मानव मिशन और आगामी महत्त्वाकांक्षी अंतरिक्ष अभियानों के लिये भारत की क्षमता में सुधार होगा।
- भारत के लागत प्रभावी मिशन और अभिनव दृष्टिकोण से आर्टेमिस कार्यक्रम को भी लाभ होगा जिससे अंतरिक्ष अन्वेषण में पारस्परिक प्रगति को बढ़ावा मिलेगा।

भारत 6जी एलायंस

- केंद्रीय टेलीकॉम मंत्री अश्विनी वैष्णव ने भारत में 6G को लाने को लेकर तैयारियां तेज कर दी हैं। हाल ही में उन्होंने इसे लेकर 'भारत 6G एलाइंस' को लॉन्च किया है।
- यह एलाइंस (Bhart 6G Alliance) भारत में टेलीकॉम सेक्टर में नई टेक्नोलॉजी और 6G के डेवलपमेंट के लिए काम करेगा।
- इस एलाइंस का फोकस भारत की टेलीकॉम इंडस्ट्री में नेक्स्ट जेनरेशन टेक्नोलॉजी को समय से देश में लाने के साथ-साथ दूसरे देशों पर निर्भरता कम करना है।
- यह एक सहयोगी मंच है जिसका उद्देश्य सार्वभौमिक और किफायती कनेक्टिविटी हासिल करना 7 स्वदेशी प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देना और दूरसंचार क्षेत्र में भारत को वैश्विक नेता के रूप में स्थापित करना है।

- इस प्लेटफॉर्म में सार्वजनिक और निजी कंपनियां, शिक्षाविद, अनुसंधान संस्थान और मानक विकास संगठन शामिल हैं, इसका उद्देश्य भारत में 6G तकनीक के विकास और तैनाती का नेतृत्व करना है।
- यह अन्य 6G वैश्विक गठबंधनों के साथ गठबंधन और तालमेल बनाएगा, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा देगा।
- इसका उद्देश्य भारत में 6G प्रौद्योगिकियों के डिजाइन, विकास और तैनाती को संचालित करने वाले कंसोर्टियम की स्थापना के लिए भारतीय स्टार्टअप, कंपनियों और विनिर्माण पारिस्थितिकी तंत्र को एक साथ लाना।
- **B6GA** का एक प्रमुख लक्ष्य भारतीय दूरसंचार प्रौद्योगिकी उत्पादों और सेवाओं के लिए बाजार पहुंच को सुविधाजनक बनाना है, जिससे देश 6G प्रौद्योगिकी में वैश्विक नेता के रूप में उभर सके।
- **6G प्रौद्योगिकी** की उन्नति का समर्थन करने के लिए, सरकार ने दूरसंचार प्रौद्योगिकी विकास निधि योजना के माध्यम से 240.51 करोड़ का अनुदान आवंटित किया है।

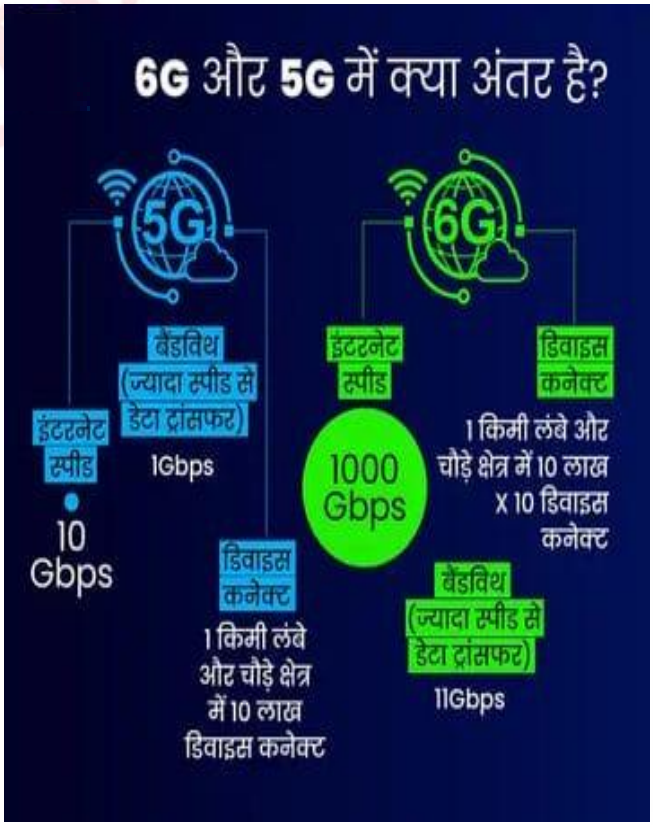

पैंगोंग त्सो झील

- हाल ही में, चीन अपने सैनिकों और माल की तेज आवाजाही की सुविधा के लिए झील के अंदर और उसके आसपास नए पुल और अन्य प्रमुख सैन्य बुनियादी ढांचे का निर्माण कर रहा है।
- चीन झील के उत्तरी और दक्षिणी तटों को जोड़ने के लिए एक पुल का निर्माण कर रहा है, जबकि भारत उत्तरी तट के किनारे पर एक ब्लैक टॉप सड़क का निर्माण कर रहा है।

- **पैंगोंग त्सो 4,225 मीटर** की ऊंचाई पर स्थित पूर्वी लद्दाख और पश्चिम तिब्बत में फैली एक एंडोरहिक झील (पानी का भंडार जो समुद्र या समुद्र में नहीं बहती है) है।
- यह 134 किमी लंबी है और पांच उप- झीलों में विभाजित है। यह दुनिया की सबसे ऊंची खारे पानी की झील है।
- इसका पानी, जो नीले रंग में रंगा हुआ प्रतीत होता है, इसके आसपास के शुष्क पहाड़ों के बिल्कुल विपरीत है।
- इसका जल खारा होने के कारण इसमें मछली या अन्य कोई जलीय जीवन नहीं है। परंतु यह कई प्रवासी पक्षियों के लिये एक महत्त्वपूर्ण प्रजनन स्थल है।
- इस झील का 45 किलोमीटर क्षेत्र भारत में स्थित है, जबकि 90 किलोमीटर क्षेत्र चीन में पड़ता है। वास्तविक नियंत्रण रेखा इस झील के मध्य से गुजरती है।
- 19वीं शताब्दी के मध्य में यह झील जॉनसन रेखा के दक्षिणी छोर पर थी। जॉनसन रेखा अक्साई चीन क्षेत्र में भारत और चीन के बीच सीमा निर्धारण का एक प्रारंभिक प्रयास था।
- फिंगर एरिया से झील दिखाई देती है सिरिजाप रेंज (झील के उत्तरी किनारे पर) से बाहर आठ चट्टानों का एक समूह है।

➔ 135 किमी लंबी पैंगोंग त्सो एक एंडोरेइक झील है, जिसमें से दो-तिहाई से अधिक चीन के नियंत्रण में है।

➔ खुर्नक फोर्ट से LAC काफी पश्चिम है, जिसमें भारत फिंगर 8 पर दावा करता है और चीन फिंगर 4 पर दावा करता है।

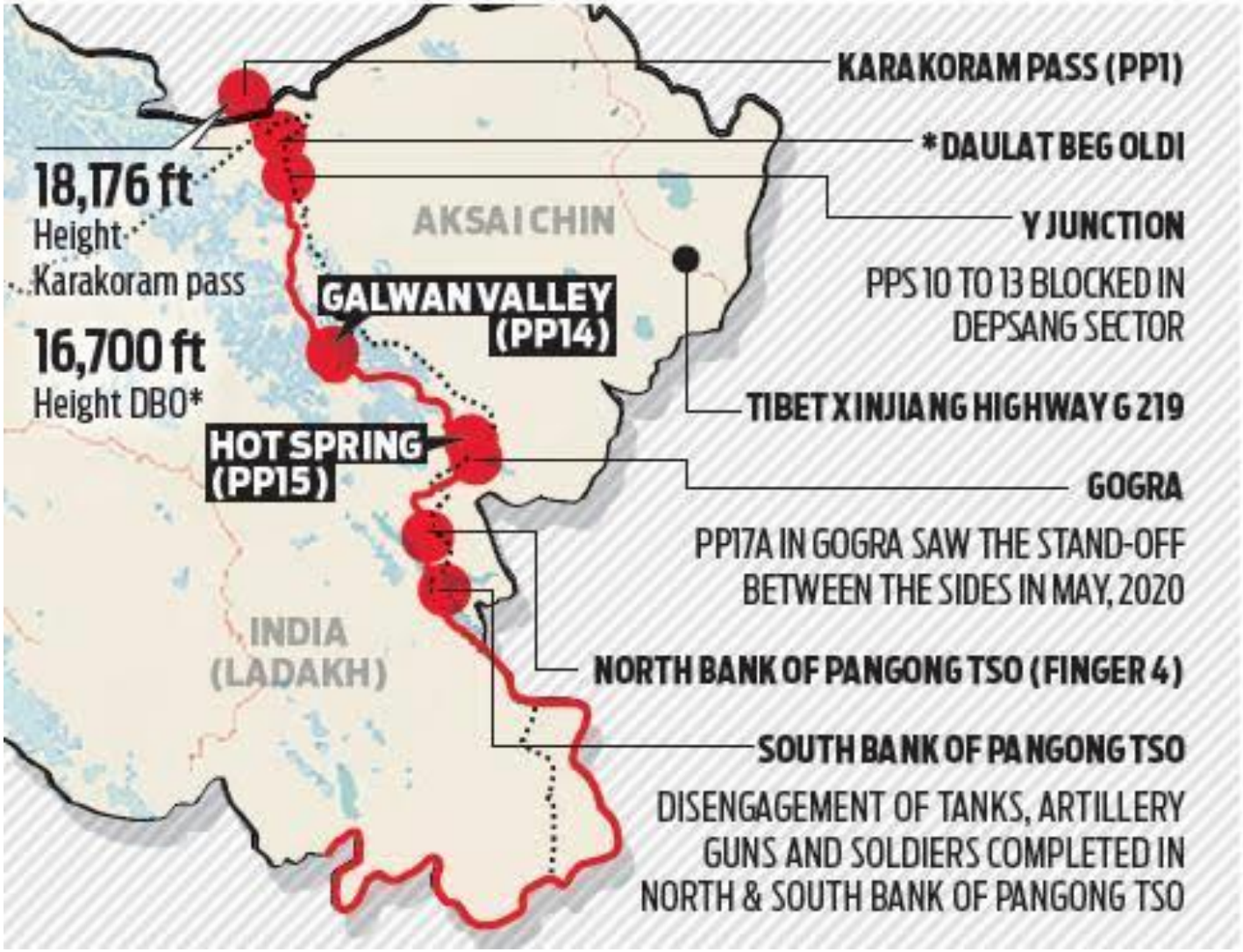

मोजाम्बिक

➔ **राजधानी :** मपुटो

➔ भारतीय नौसेना जहाज (आईएनएस) सुनयना ने हाल ही में बीरा, **मोज़ाम्बिक** का दौरा किया, देश के साथ भारत के सौहार्दपूर्ण संबंधों और क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास (एसएजीएआर) के दृष्टिकोण को मजबूत किया।

➔ आईएनएस सुनयना के कमांडिंग ऑफिसर ने मोज़ाम्बिक गणराज्य के राज्य सचिव और बीरा नगर परिषद के मेयर के कार्यालय से मुलाकात की।

➔ आईएनएस सुनयना भारतीय नौसेना का सरयू श्रेणी का गश्ती जहाज है।

➔ **राजनीतिक सीमाएं -**

- **स्थानः** यह अफ्रीका के दक्षिण - पूर्वी तट पर स्थित है। यह हिंद महासागर में मोजाम्बिक चैनल की पश्चिमी सीमा पर स्थित है।
- **सीमावर्ती देशः** मलावी, दक्षिण अफ्रीका, स्वाज़ीलैंड, तंजानिया, जाम्बिया और जिम्बाब्वे।
- यह कोमोरोस, मेडागास्कर और मैयट द्वीप (फ्रांस) के साथ अपनी समुद्री सीमा साझा करता है।

➔ **भौगोलिक विशेषताएंः**

- **जलवायुः** यहां की जलवायु में भिन्नता है। यहां दक्षिण से उत्तर तक उपोष्णकटिबंधीय से लेकर उष्णकटिबंधीय प्रकार की जलवायु पाई जाती है।

➔ **प्रमुख नदियाँ :** जाम्बेजी नदी, लिम्पोपो नदी, रुवुमा नदी आदि।

➔ **प्रमुख झीलें :** मलावी झील (न्यासा), काहोरा बासा आदि।

- मोज़ाम्बिक द्वीप के नाम पर पुर्तगालियों द्वारा देश का नाम मोज़ाम्बिक रखा गया था। मोज़ाम्बिक की राजधानी और सबसे बड़ा शहर मापुटो है (जिसे पहले **"लौरेंको मार्क्स"** के नाम से जाना जाता था - 1876 से 1976 तक)।
- मोज़ाम्बिक दुनिया के सबसे गरीब देशों में से एक है, मानव विकास सूचकांक पर 189 देशों में से 181वें स्थान पर है।
- मोज़ाम्बिक के भूगोल में ज्यादातर तटीय तराई क्षेत्र शामिल हैं, इसके केंद्र में ऊपरी भूमि और उत्तर-पश्चिम में ऊंचे पठार हैं। पश्चिमी भाग में पहाड़ भी हैं। यह देश दक्षिणी अफ्रीका के पूर्वी तट पर, मेडागास्कर द्वीप के ठीक पश्चिम में स्थित है।
- मोज़ाम्बिक में उष्णकटिबंधीय से उपोष्णकटिबंधीय जलवायु है। मोज़ाम्बिक में वर्षा वितरण उत्तर-दक्षिण ढाल के अनुसार होता है, जिसमें तट के साथ अधिक वर्षा होती है, जहाँ वार्षिक औसत 800 और 1200 मिमी के बीच होता है।
  - **देश का गठन :** 25 जून 1975
  - **देश की मुद्रा** - मोज़ाम्बीकी मेतीकाल
  - **राष्ट्रपति** - फिलिप न्यूसी